

— उदा *davonführen* ÇAT. Br. 3, 3, 8, 17. ततो मा मूतस्तूर्णमुदावक्तु MBh. 8, 7177. *dahinziehen*: तुरगाः शिखपिडनमुदावक्तु so v. a. *zogen den Wagen des Cikh* 7, 969. 3, 15704. *hinaufführen*: अग्रिर्व्यमुदावक्तु 12, 12196. *heimführen, heirathen*: सुभद्रा भार्यामुदावक्तु 1, 3830. fg. 6, 5601 (nach der Lesart der ed. Bomb.). R. 7, 4, 16.

— समुदा *hinausführen, hinausziehen*: पूर्व तु बालाः समुदावक्ति (so die neuere Ausg.) । वृद्धाश्च पश्चात्प्रतिमा नयन्ति HARIV. 8467. *davonführen, forttragen*: ततो कृत इति ज्ञात्वा तान्भक्तान्समुदावक्तु (राजसः) R. 7, 69, 15. *dahinziehen* (am Wagen) Jmd: (अश्वः) पुत्रं विराटराजस्य सवरे समुदावक्तु MBh. 7, 966. *heimführen, heirathen*: अहं विचित्रवीर्यस्य द्वे कन्ये समुदावक्तु 13, 2441.

— उपा *herbeiführen* RV. 1, 74, 6. 3, 35, 2. द्विजगृहे द्विजमेदमुपावक्तु Verz. d. Oxf. H. 255, a, 17.

— निरा *entführen* PANĀY. Br. 9, 4, 11. *holen*: नवौ क्षिप्यपीरास-न्याभिः कुष्ठं निरावक्तु AV. 5, 4, 5.

— समा *zusammen herbeiführen, zusammenbringen, versammeln*: स-पदातीनुविजः समावक्ति TBr. 3, 8, 1, 2. Ait. Br. 8, 22. *herbeiführen*: (अनिलः) कदम्बसर्गार्जुनपुष्पभूतं समावक्तुगन्धम् HARIV. 8790. *med. etwa sich zusammenfinden*: तावक् संवक्तवहि Ait. Br. 8, 27. nach Sā. *sich Lebensunterhalt (निर्वाह) verschaffen*.

— उद् 1) *hinausführen, hinaufführen; hinaussschaffen, hinausheben* RV. 1, 50, 1. भुङ्गमुद्कैश्वर्यसिः 7, 69, 7. अथः समुद्गादिवमुद्कैति AV. 4, 27, 4. 13, 1, 36. 18, 2, 22. 19, 23, 1. KAUSH. Up. 3, 5. *hinaussschaffen* Ait. Br. 2, 19. TBr. 1, 1, 5, 6. श्यावाश्चामार्चनानसं सन्नमासीनं धन्वादवक्तु PANĀY. Br. 8, 3, 11. यदीमाविदं रोहितावश्माचितं कूलमुद्कैतः *hinausziehen* 14, 3, 13. क्वाः प्रयासि देवेश्वरमुद्कैतो नभस्तलम् HARIV. 13127. *herausziehen* (Pfeile aus dem Köcher) MBh. 3, 15657. 12, 125. उद्वाक् शरान्वो-रवावणस्य सुतं प्रति R. 6, 70, 9. *aufheben*: उद्कैयं भुजायो हि मेदिनी-मन्बरे स्थितः 3, 53, 9. 5, 73, 36. 6, 36, 90. Bhāg. P. 10, 13, 22. *in die Höhe bringen*: पौरवं वंशम् MBh. 1, 3705. — 2) *wegführen* (die junge Frau aus dem Vaterhause) GORR. 2, 2, 17. Pā. GRU. 1, 11. RAGH. 7, 32. 67. *überh. heimführen, heirathen*: नोदकैत्कपितो कन्याम् M. 3, 8. 10. 15. 7, 77. JĀN. 1, 52. RAGH. 11, 54. VARĀH. Bṛh. S. 70, 1. KATHĀS. 26, 184. 34, 239. Bhāg. P. 3, 22, 15. 4, 30, 15. 5, 2, 22. 10, 52, 41. MĀRK. P. 21, 31. 28, 18. 34, 77. fg. 113, 32. *med. M. 3, 4. KATHĀS. 36, 56. Bhāg. P. 10, 52, 42. PANĀY. 190, 1. उद्वाढ BHATT. 2, 48. उद्वाढ KATHĀS. 45, 304. 75, 131. 89, 108. 92, 52. — 3) *zuführen, bringen*: रतिमुद्कैतादद्या गेड्वैधमुद्वति Bhāg. P. 1, 8, 42. बलिम् 10, 87, 28. द्विषो खेदम् 4, 10, 36. उद्कृष्यामि तां-स्ते ऽहं कामान् 25, 36. — 4) *tragen*: स्कन्धेन Bhāg. P. 5, 8, 10. भारं शि-रसा गुरुम् 4, 29, 33. जटाजूटैः 5, 17, 3. MBh. 7, 7963. R. 7, 34, 38 (med.). RAGH. 11, 66. आत्मानमुद्वाढुमशकुवत्यः 16, 60. Çu. 9, 73. Hit. 127, 1. प-रिचं गुरुम् BHATT. 9, 7. भारम् MBh. 3, 335 (med.). 336. R. 7, 68, 4. दारि-द्र्यभारम् Spr. 446. राज्यभारम् KATHĀS. 15, 4. गृहभारम् 22, 156. Bhāg. P. 7, 9, 43. राज्यधरं गुर्विम् MBh. 1, 4272. 3, 334. 4, 919. 8, 375. 13, 377. 7169. 14, 25. R. 5, 36, 65 (med.). 6, 112, 109 (med.). KUMĀRAS. 6, 30. PANĀY. ed. ORN. 22, 21. जटामण्डलम् HARIV. 4365. रशनाकलापम् MRĀĪH. 11, 15. भू-षणम् R. 3, 7. वासांसि BHATT. 3, 42. कैशेयकान्युद्कैते ऽजिनं च VARĀH. Bṛh. 27 (23), 27. गार्हस्थ्यम् (als eine Last) MBh. 12, 324. गार्हस्थ्यं भा-*

VI. Theil.

रमाहितम् । स्कन्धे MĀRK. P. 29, 41. महीम् so v. a. *regieren* RĀGA-TAR. 3, 529. राज्यम् dass. KATHĀS. 86, 16. द्विधा विभक्ता श्रियमुद्कैतो धुरं रथा-श्रिवि संयक्तोतुः MĀLAV. 89. मनसोद्कैतो भृशम् । डःखान्यधारयन् MBh. 15, 137. पुत्रशोकं धैर्येणोद्कैते 150. R. GORR. 2, 16, 46. मकैदेवस्य वचन-मुद्कैन्मनसा *im Herzen tragend* so v. a. *eingedenk* HARIV. 8046. *halten* Spr. 846. सरोजमितरेण (कोरेण) चोद्कैतो VARĀH. Bṛh. S. 58, 37. पदमुद्कै-तमुद्कैतो KUMĀRAS. 5, 85. स्कन्धासक्तं कृत्तमथोद्कैतो MBh. 13, 436. ल-म्बं शिरस्त्रं वामपाणिना RĀGA-TAR. 3, 342. *festhalten* (Gegens. अपवक्तु *aufgeben*) Bhāg. P. 5, 14, 37. — 5) *an sich tragen, haben; äussern, an den Tag legen*: अत्यदुतत्रयम् Bhāg. P. 7, 8, 18. स्कन्धमुद्कैति गोपतितु-ल्यम् VARĀH. Bṛh. 27 (23), 5. VIKR. 130. मनोरथं पौवनम् KUMĀRAS. 1, 19. श्रियमुद्कैति मुखं ते बालातपरक्तकमलस्य VIKR. 136. चित्ताविषादविषदं च मकैतसर्वं च MĀLATIM. 96, 4. 5. शतगुणीभूतामिवोत्काण्ठम् KATHĀS. 18, 371. नाकारमुद्कैति RĀGA-TAR. 3, 252. तर्षात्कर्षम् 478. प्रमोदम् 6, 174. गर्वम् Sā. D. 56, 13. मानम् Spr. 2180. अच्युते तीव्रौघा भक्तिम् Bhāg. P. 4, 12, 11. 23, 37. 6, 17, 31. वासुदेवे रतिम् 4, 28, 39. प्रभूतमुच्छ्वासम् (so die ed. Bomb.) PANĀY. 141, 4. — 6) *zu Ende führen*: प्रारब्धम् Spr. 1913, v. l. — 7) उद्वाढ = उढ und पीव (स्थूल) H. an. 3, 189. MED. dh. 7. — 8) उद्कैन् (वक्त्राच्छेषितम्) MBh. 3, 16129 fehlerhaft für उद्मन्, wie die ed. Bomb. liest und wie schon WESTERGAARD vermuthet hatte. — Vgl. उद्कै fg. und उद्वाक्. — caus. 1) *verheirathen* (eine Tochter u. s. w.) MBh. 1, 3801. Spr. 512. — 2) *heimführen, heirathen* (ein Mädchen) PANĀY. 181, 5. 261, 5. — Vgl. उद्वाक्.

— प्रोद् *äussern, an den Tag legen*: भूतेषु प्रोद्कैश्वानुकम्पाम् PANĀY. 3, 10, 3. — Vgl. प्रोद्वाक्.

— समुद् 1) *hinaustragen, forttragen*: नरेन्द्रं दिधत्तपत्तः समुद्कैरा-रात् BHATT. 3, 33. — 2) *heimführen, heirathen* (ein Mädchen) JĀN. 3, 261. R. 2, 107, 3 (115, 3 GORR.). Bhāg. P. 10, 52, 24. — 3) *aufheben*: व-असारमयं शिशुम् MBh. 2, 718. कृच्छ्रादिव समुद्कैन् । पदानि 15, 171. — 4) *tragen*: जटाभारम् HARIV. 2825. 12306. मन्त्रिधुराम् KATHĀS. 4, 136. त-द्राव्यचित्ताभारम् 86, 9. मालाम् MBh. 13, 982. डःखानि 780. मनसा, कृद-येन *im Herzen tragen, eingedenk sein* HARIV. 8749. R. 7, 17, 16. — 5) *an sich tragen, haben, an den Tag legen, äussern*: चतुर्मनोहरं पीनं मेखला-दामभूषितम् । समुद्कैतो जघनम् R. 7, 26, 16. शक्रकार्मुककरुचम् VARĀH. Bṛh. S. 44, 25. स्वेदम् Verz. d. Oxf. H. 171, a, 1. विषादम् R. 6, 82, 22.

— उप 1) *herbeiführen*: कृती इक्षेपं वत्ततः (इन्द्रम्) RV. 1, 16, 2. 47, 8. गृहम् 49, 1. 8, 4, 14. 6, 42. 10, 32, 2. (रथः) य इक्ष्माणुपावक्तु MBh. 2, 2064. न मे प्रीतिमुपावक्तु *bringen, verschaffen* 13, 709. सर्वं तद्गवान्म-क्षमुपोवाक् प्रतिश्रुतम् Bhāg. P. 3, 23, 51. Jmd *zu Etwas bringen, verleiten*: मा त्वं भर्तारमसद्धर्ममुपावक्तु R. ed. Bomb. 2, 35, 28. Hierher oder zu 1. उक् उपोढ *herbeigeführt, bewirkt*: कुकर्मभिरुपोढापि लक्ष्मीः RĀGA-TAR. 6, 295. ऽराम Spr. 3807. ऽमद DAÇAK. 83, 11. *nahe gerückt, in der Nähe befindlich, nahe bevorstehend*: ऽबल MĀLAV. 76. ऽपाणिग्रहणा KUMĀRAS. 7, 4. ततो ऽप्युपोढा रजनी दिनन्त्ये so v. a. *brach ein* R. GORR. 2, 116, 49. अनुपोढार्गल *mit nicht vorgeschobenem Riegel* RAGH. 16, 6 gehört zu 1. उक्. — 2) उपोढा *eine Hinzugeheirathete d. i. Nebengattin* R. 1, 13, 37. — उपोढ = उढ H. an. 3, 189. MED. dh. 7. — Vgl. उपवक्तु, उप-पवाहितं fg.

55